डॉ० राम आशीष

असिस्टेण्ट प्रोफेसर - हिन्दी

विषय - इतिहास और इतिहास दर्शन

कक्षा - एम०ए० द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रश्नपत्र शीर्षक - हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल एवं मध्यकाल)

Scanned with CamScanner

इतिहास और इतिहास दर्शन

(1) **इतिहास का अर्थ एवं स्वरूप** - इतिहास का शाब्दिक अर्थ है- 'ऐसा ही था' या 'ऐसा ही हुआ'। इससे दो बातें स्पष्ट हैं- एक तो इतिहास का सम्बन्ध अतीत से है, दूसरा यह कि इसके अंतर्गत केवल वास्तविक या यथार्थ घटनाओं को ही समावेशित किया जाता है। संक्षेप में कहा जाए तो, ~~इतिहास~~ अतीत के किसी भी तथ्य, तत्व एवं प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन व विश्लेषण को, जो कि काल विशेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया हो, इतिहास कहा जाता है।

(2) इतिहास कला या विज्ञान

इतिहास कला है या विज्ञान इसका निर्धारण अध्ययन पद्धतियों के आधार पर किया जाता है। इतिहास हमें अतीत का इतिवृत्त प्रदान करता है, किन्तु यह हम पर निर्भर करता है कि हम उस इतिवृत्त का प्रयोग किस प्रकार करते हैं। यदि अतीत के इतिवृत्त को हम आत्मपरक दृष्टिकोण, कैमाश्रित अतलदृष्टिएवं ललित शैली में प्रस्तुत करते हैं तो वह 'कला' की संज्ञा से विभूषित होगा। जबकि वस्तु परक दृष्टिकोण, तर्कपूर्ण शैली व गवेषणात्मक पद्धति से प्रस्तुत किया गया अतीत का विवरण 'विज्ञान' की विशेषताओं से युक्त माना जा सकता है।

(3) इतिहास दर्शन

इतिहास दर्शन के अन्तर्गत इतिहास के संबन्ध में प्रयुक्त व प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोणों, धारणाओं व विचारों का अध्ययन किया जाता है। अस्तु इतिहास संबंधी इन्हीं विचारों या धारणाओं को समग्र रूप में 'इतिहास दर्शन' ~~कहा जाता~~ की संज्ञा दी जाती है।

Scanned with CamScanner

(4) इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण आदर्शवादी व आध्यात्मवादी रहा है। स्थूल भौतिक जगत ~~में भी~~ की स्थूल घटनाओं में भी आध्यात्मिक तत्वों के अनुसंधान की प्रवृत्ति रही है। यहाँ सामाजिक मूल्यों की अपेक्षा चिरन्तन मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। इसी कारण प्राचीन इतिहासकार परिवर्तनशील अतीत से उन प्रवृत्तियों का अनुसंधान करते हैं जो मानव को अमर एवं स्थायी बनाते हैं। महाभारतकार ने महाभारत जैसे इतिवृत्त के माध्यम से धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का उपदेश दिया है।

बाद के इतिहासकारों ने आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक तत्वों की अपेक्षा यथार्थपरक वास्तविक तथ्यों को अधिक महत्व दिया। लेकिन काल्पनिकता को छोड़ वे भी नहीं छोड़ पाये। अतः परवर्ती इतिहासकारों का इतिहास शुद्ध इतिहास की अपेक्षा 'काल्पनिक इतिहास' या 'ऐतिहासिक काव्य' के रूप में विकसित हुआ।

(5) इतिहास के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण

- पाश्चात्य इतिहासकारों का दृष्टिकोण इतिहास के प्रति यथार्थवादी रहा है। यूनानी विद्वान हिरोडोटस इसे 'गवेषण' या अनुसंधान के अर्थ में ग्रहण करते हैं। इसके चार लक्षण बताते हैं-

1- इतिहास वैज्ञानिक विद्या है।
2- मानवजाति से सम्बन्धित होने के कारण मानवीय विद्या है।
3- यह तर्कसंगत विद्या है।
4- अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालने के कारण शिक्षाप्रद विद्या है।

- जर्मन विद्वान कांत ने इतिहास की व्याख्या करते हुए कहा कि सृष्टि का बाह्य विकास प्रकृति के आन्तरिक विकास-प्रक्रिया का प्रतिबिम्ब मात्र है। उनके ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे प्राकृतिक नियमों की प्रवृत्ति को समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

- हीगल के अनुसार विश्व इतिहास की प्रक्रिया का एक मूल लक्ष्य मानव चेतना का विकास है, जो द्वन्द्वात्मक पद्धति पर आधारित है। इस द्वन्द्वात्मक पद्धति के अनुसार वाद एवं प्रतिवाद के द्वन्द्व से संवाद का विकास होता है। इतिहास की व्याख्या भी इसी द्वन्द्वात्मक पद्धति के आधार पर होनी चाहिए।

साहित्य का इतिहास दर्शन

(6)

साहित्य के इतिहास के अंतर्गत प्राकृतिक घटनाओं और मानवीय क्रिया कलापों के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से किया जाता है। साहित्यिक रचनाएँ भी साहित्यकारों की रचनात्मक क्रियाओं व प्रवृत्तियों की सूचक होती है। अतः इनके इतिहास को समझने के लिए इनके रचयिताओं तथा उनसे सम्बन्धित स्थितियों, परिस्थितियों व परम्पराओं को समझना भी आवश्यक है। साहित्य के इतिहास में रचयिताओं व रचना का स्थूल परिचय का वर्णन कर देना ही साहित्य के इतिहास की पर्याप्त व्याख्या नहीं है। इस दिशा में उत्तरोत्तर सूक्ष्मता व गंभीरता से प्रयास होता रहा।

(7)

- फ्रेंच विद्वान तेन ने साहित्येतिहास दर्शन के संदर्भ में तीन तत्वों की बात करते हैं - 1- जाति 2- वातावरण 3- क्षणविशेष अर्थात साहित्य के इतिहास को समझने के लिए इससे सम्बन्धित जातीय परम्पराओं, राष्ट्रीय व सामाजिक वातावरण, व समसामयिक परिस्थितियों का विश्लेषण आवश्यक है।

- विद्वान हडसन ने तेन के तीनों तत्वों के अतिरिक्त साहित्यकार के व्यक्तित्व व उसकी प्रतिभा को साहित्येतिहास के लिए आवश्यक मानते हैं।

(8)

- जर्मन चिंतकों ने 'युग चेतना' को बहुत महत्व दिया है। इनके अनुसार साहित्येतिहास की व्याख्या युगीन चेतना के आधार पर किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

[9] मार्क्सवादी आलोचकों ने द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद, वर्गसंघर्ष, आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट किया।

[10] इस प्रकार से साहित्य सिद्धांत की व्याख्या विविध दृष्टिकोणों से की गयी है। लेकिन यह स्पष्ट है कि साहित्य का अध्ययन केवल साहित्यिक रचनाओं व रचनाकार तक सीमित होकर नहीं किया जा सकता है। इसकी विषयगत प्रवृत्तियों व शैलीगत प्रक्रियाओं के स्पष्टीकरण के लिए उससे सम्बन्धित राष्ट्रीय परम्पराओं, सामाजिक वातावरण, आर्थिक परिस्थितियों, युगीन चेतना एवं साहित्यकार की वैयक्तिक प्रवृत्तियों का विवेचन विश्लेषण आवश्यक है।

Scanned with CamScanner